गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

वैश्विक डिजिटल युग में हिंदी को रोजगार, तकनीक और जनसंचार की मुख्य भाषा बनाकर ही इसे भविष्य की सशक्त और अग्रणी भाषा बनाया जा सकता है।

राजपाल

सत्र : 2025-26

जुलाई, 2026

हिंदी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 02, अंक 19, जुलाई 2026
आषाढ़ और श्रावण| विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
राकेश बिडाणियाँ,
डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

छात्र सम्पादक

नरेश सिंह,
विनय कुमार ,
कोमल, मनीषा

सम्पादकीय कार्यालय
हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

इंटर्नशिप
फ़िल्म समीक्षा
विविध

साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
विलोम शब्द
प्रशासनिक शब्दावली
पुस्तक समीक्षा

हिन्दी साहित्य विषय के प्रतियोगियों के लिए भी उपयोगी

संदेश

मुझे अत्यंत हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है कि इस जुलाई माह से मैं इस प्रतिष्ठित महाविद्यालय की प्राचार्या के रूप में अपनी सेवाएँ प्रारंभ कर रही हूँ। यह मेरे लिए एक विनम्र अवसर है कि मैं इस विभागीय पत्रिका के माध्यम से आप सभी से संवाद कर रही हूँ।

इस पावन अवसर पर महाविद्यालयम में नए कोर्सों में प्रवेश की प्रक्रिया सभी कक्षाओं में जारी है। मैं सभी विद्यार्थियों का स्वागत करती हूँ—चाहे वे नए प्रवेशी हों या पुराने छात्र—और आशा करती हूँ कि यह सत्र आप सभी के लिए अधिगम, सृजनात्मकता एवं व्यक्तित्व विकास का एक समृद्ध अध्याय सिद्ध होगा।

मेरा सदैव यह दृढ़ विश्वास रहा है कि अनुशासन, समर्पण और परिश्रम से ही सच्ची सफलता प्राप्त होती है। इस पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय की गतिविधियों, खेलकूद, सांस्कृतिक आयोजनों एवं विभिन्न प्रतियोगिताओं की झलक मिलती है, जो हमारे विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने में सहायक हैं।

मैं इस पत्रिका के संपादकीय दल को उनके अथक प्रयासों के लिए हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विभागीय पत्रिका हमारी संस्था की गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाने और विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति को नई ऊँचाइयाँ प्रदान करने में सफल होगी।

आइए, हम सब मिलकर इस नए सत्र में ज्ञान, अनुशासन और नवाचार के पथ पर अग्रसर हों और महाविद्यालय को उत्कृष्टता के नए शिखर पर पहुँचाएँ।

आप सभी को मेरी शुभकामनाएँ।

प्राचार्य
प्रो. अंजू चौधरी

संपादकीय

नवसत्र : ज्ञान, संवेदना और नवनिर्माण का संकल्प

सर्वप्रथम, हमें अत्यंत हर्ष है कि इसी माह हमारी प्राचार्या प्रोफेसर अंजू चौधरी ने इस महाविद्यालय के प्राचार्य पद का दायित्व ग्रहण किया है। हिंदी विभाग की ओर से हम प्राचार्या महोदया का हार्दिक अभिनंदन और स्वागत करते हैं। उनके कुशल नेतृत्व में महाविद्यालय शिक्षा, शोध और सांस्कृतिक गतिविधियों में नई ऊंचाइयों को छुएगा, ऐसा हमें विश्वास है।
इसी उत्साहवर्धक माह में महाविद्यालयीन नए कोर्स में प्रवेश प्रक्रिया सभी कक्षाओं में जारी है। नए विद्यार्थियों का परिसर में आगमन हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी उल्लास और आशा का संचार कर रहा है। हिंदी विभाग परिवार इन सभी नवागतों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता है। साहित्य की दृष्टि से यह माह अत्यंत महत्वपूर्ण है। जुलाई माह हिंदी साहित्य के दो महान स्तंभों से जुड़ा है—कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद और चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' । प्रेमचंद जी (जन्म: 31 जुलाई, 1880) ने हिंदी उपन्यास और कहानी को यथार्थवादी दिशा प्रदान की। उनकी रचनाएँ किसानों, मज़दूरों और समाज के वंचित वर्गों के जीवन का आईना हैं। बंगाल के प्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ने ही उन्हें 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि दी थी। वहीं, चंद्रधर शर्मा गुलेरी (जन्म: 7 जुलाई, 1883) हिंदी कहानी विधा के आरंभिक और सशक्त रचनाकार हैं। संस्कृत, हिंदी और अंग्रेज़ी के प्रकांड विद्वान गुलेरी जी की कहानी 'उसने कहा था' (1915) को हिंदी की पहली मौलिक कहानी होने का गौरव प्राप्त है। इन दोनों महान साहित्यकारों को हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इस अंक की एक और विशेषता है—नए पाठ्यक्रम में हिंदी ऑनर्स की विशेषताएँ। वर्तमान शैक्षणिक सत्र में हिंदी ऑनर्स पाठ्यक्रम को अधिक समग्र, व्यावहारिक और समसामयिक बनाया गया है। हिंदी की समृद्ध साहित्यिक परंपरा को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझने और विकसित करने का अवसर, रचनात्मक लेखन एवं शोध-प्रवृत्ति का विकास, मीडिया, अनुवाद एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में करियर के अवसर—ये इस पाठ्यक्रम की प्रमुख विशेषताएँ हैं। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत विद्यार्थियों को अनुशासनात्मक ज्ञान के साथ-साथ रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच विकसित करने का अवसर प्रदान किया गया है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, अपितु हमारी सांस्कृतिक चेतना का आधार है, और यह पाठ्यक्रम उसी दिशा में एक सार्थक प्रयास है।
अंत में, इस अंक को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी लेखकों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को हृदय से धन्यवाद। आशा है कि यह अंक आपको ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक लगेगा। आपके सुझाव और रचनात्मक योगदान हमारी पत्रिका को सदैव समृद्ध करते रहेंगे।

हिंदी की उन्नति ही राष्ट्र की उन्नति है।

संपादक

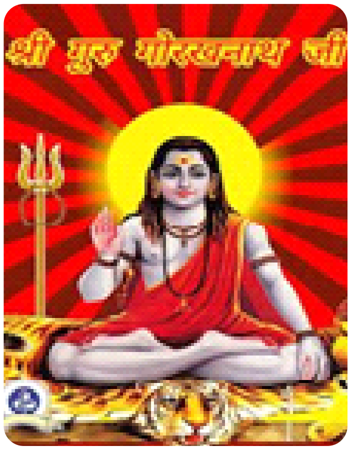

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे....

५.२२ उपर्युक्त नाथ योगियों के अतिरिक्त कुछ अन्य नाथों के एक-एक पद अथवा एक दो सबदियां मिलती हैं जिनकी विषय बस्तु अन्य नाथ योगियों के समान ही है। इन का संक्षिप्त विवेचन निम्नलिखित है :-

५-२२.१ सिध गरीब की रचित तीन सबदियों में काया रूपी नगरी में मन रूपी राजा का वर्णन किया गया है तथा पाताल की मीडकी को आकाश जंत्र बजाते हुए तथा 'चंद सूरिज मिल गंग जमन गीत' गाते हुए बताये गए हैं।

५-२२.२ घुणकर नाथ की चार सबदियों में व्यर्थ कार्य करने से रोका गया है, मन साधन, पवन-साधना, विनम्रता तथा सोच विचार कर बोलने का उपदेश दिया गया है।
५-२२.३ देवल जी की चार सबदियों में क्रमशः देवल की भ्रमणवृत्ति का परिचय मिलता है । उनका कथन है कि ज्ञान केवल सुपात्र को ही देना चाहिए -

ज्ञान रतन की कोथली, काहू पारिष आगे षोलि ।

इनकी मान्यता है कम बोलना चाहिए तथा सोच-विचार कर बोलना चाहिए ।

५-२२.४ नागा अरजन की दो सबदियां हैं। पहली सबदी में आत्मा और परमात्मा के मिलन का रूपक दारू और दाष के रूप में बांधा गया है तथा दूसरी सबदी में स्वयं को मिटा कर सतगुरू की स्थापना करने तथा सहज ज्योति में विलीन हो जाने का वर्णन किया गया है।

५-२२.५ महादेव जी की सबदी में योग साधना द्वारा षट्चक्र बंधने अजपाजाप की महिमा, १० अज्ञानी योगी पृथ्वी का भार होता है तथा अज्ञानी राजा की सेवा नहीं करनी चाहिए, आदि का निरूपण किया गया है सच्चे योगी के गुणों का वर्णन करते हुए वे कहते हैं:-

इन्द्री का जती मुष का सती, हिरदा का कंमल मुक्ता ।

ईश्वर बोलतं पारबती, ते जोगी जोग जुक्ता । *२ व्यर्थ के वाद-विवादों से दूर रहने का भी इन्होंने उपदेश दिया है ।

५-२२.६ रामचन्द्र जी की एक सबदी है जिसमें योगी को नारी के मोह से से दूर रहने के लिए कहा गया है क्यों कि :-

'अगनि कु ंड समो नारी, घृत कु ंड समो नर ।

५-२२.७ लाल जी का एक पद है जिसमें उन्होंने योग साधना पद्धति का वर्णन किया है तथा उसमें नाथ सम्प्रदाय की प्रचलित शब्दावली का प्रयोग किया गया है ।
५-२२.८ सतवंती के पद में 'गगन मंडल चढ़ि' प्रियतम को प्राप्त करने का उपाय बताया गया है तथा 'सुसंमवेद' का भेद बताया गया है ।"

५-२२.६ सकुल हंस की सबदी में बताया गया है कि योग साधना कोई विरला ही कर सकता है तथा परमहंस की प्राप्ति चैतन्य रह कर ही की जा सकती है।

५-२३ महाराष्ट्र के नाथ पंथीय कवियों का साहित्य

महाराष्ट्र के नाथ पंथीय कवियों में मुकुन्द राज का प्रमुख स्थान है जिनके साहित्य का परिचय पहले ही दिया जा चुका है। यहाँ महाराष्ट्र के कुछ अन्य नाथपंथीय कवियों के साहित्य का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है ।

५-२३.१ ज्ञानेश्वर अथवा ज्ञानदेव देव द्वारा विरचित 'ज्ञानेश्वरी' को नाथ सम्प्रदाय का आद्य स्पष्टीकरण ग्रंथ कहते हैं। ज्ञानेश्वरी में ज्ञानेश्वर ने मत्स्येन्द्र, गोरख तथा गहिनीनाथ का आदरपूर्वक उल्लेख किया है तथा बताया है कि विश्व में प्रचलित विविध सम्प्रदायों में नाथ सम्प्रदाय का महत्त्व असाधारण है। वैयक्तिक मान अपमान की वृथा कल्पनाओं को दूरकर समस्त भूतमात्र के प्रति प्रेमभाव तथा बिनम्रभाव धारण कर दर्शनग्रंथों का अन्धानुकरण त्यागकर गुरू निवृतिनाथ की कृपा से हमने नाथों का अनुसरण किया है। इन्होंने वाह्याचार तथा अविवेका- विष्ठित मूर्ख रूढ़ियों को त्याग कर नाथ सम्प्रदाय के विशुद्ध भाव, कत्र्तव्य पालन, सत् आचरण आदि सिद्धान्तों को अपनाने पर बल दिया है तथा जन-साधारण को शुद्ध साधना का मार्ग दिखाया है।"

गुरु गोरखनाथ के पद

कासौं झूझौं अवधू राई, विषय न दीसै कोई। जासौं अब झूझौं रे आतम राम सोई ॥ टेक ॥ आपण ही मछ कछ आपण ही जाल। आपण ही धीवर आपण ही काल ॥ आपण ही स्यंघ बाध आपण ही गाइ। आपण ही मारीला आपण ही खाइ ॥ आपण ही टाटी फड़िका आपण ही बंध । आपण ही मारीला आपण ही कंध ॥ देव । न्हाइबे कौं तीरथ न पूजिबै को भणंत गोरखनाथ अलख अभेव ॥

हे अवधू ! किससे युद्ध करूँ, सामने कोई विषय ही दिखाई नहीं देता। जिससे जूझता हूँ, वह आत्मा का स्वरूप है। (तत्त्वज्ञान होने पर मैं और पर का भेद नहीं रहता)। आत्मा ही मछली और कछुआ है। आत्मा ही जाल डालती है। धीवर में भी वही आत्मा है। धीवर की आत्मा ही काल बन जाती है। यह आत्मा स्वयं सिंह और बाघ है। यही गाय के रूप में है। यह अपने आपको मारती है और अपने आपको खाती है। यह आत्मा प्राणीरूप में हड्डियों का ढाँचा है (टाटी फड़िका) और अपने आप शरीर के बन्धन में पड़ती है। यह स्वयं ही अपने शरीर (कंध) को मारती है। इस आत्मा से परे स्नान के लिए न कोई तीर्थ है और न ही पूजा के लिए देव है। गोरखनाथ कहता है- यह आत्मा अलक्ष्य है, अभेद्य है।
गोरख का कथन है कि सभी प्राणियों में एक ही चैतन्य है। अनेक शरीरों में इसके अनेक रूप हैं जो परस्पर मरते हैं और मारते हैं। तत्त्व ज्ञान होने पर अनुभव होता है कि मरने और मारने वाला चैतन्य एक ही है, परन्तु वह मरता भी नहीं, उसके बाह्य रूप मरते हैं।

इंटर्नशिप : हिंदी अध्ययन को व्यावहारिकता से जोड़ने का सशक्त माध्यम

नई शिक्षा नीति (NEP-2020) के परिप्रेक्ष्य में एम.ए. हिंदी का व्यावसायिक आयाम

“ज्ञान तभी सार्थक होता है जब वह समाज, कार्यक्षेत्र और जीवन में उपयोगी सिद्ध हो।” यही विचार नई शिक्षा नीति-2020 का मूल आधार है। इसी दृष्टि से गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार द्वारा एम.ए. हिंदी के पाठ्यक्रम में इंटर्नशिप को अनिवार्य बनाया गया है। यह केवल एक औपचारिक शैक्षणिक गतिविधि नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को कक्षा के ज्ञान से बाहर निकालकर वास्तविक कार्य-परिवेश से जोड़ने का सशक्त माध्यम है।

हिंदी भाषा और साहित्य का क्षेत्र आज केवल अध्यापन तक सीमित नहीं रहा। पत्रकारिता, प्रकाशन, अनुवाद, डिजिटल मीडिया, राजभाषा, कॉर्पोरेट संचार, विज्ञापन, सांस्कृतिक संस्थानों, शोध संस्थानों तथा प्रशासनिक सेवाओं में हिंदी की उपयोगिता निरंतर बढ़ रही है। ऐसे में इंटर्नशिप विद्यार्थियों को इन विविध क्षेत्रों से परिचित कराकर उनके व्यक्तित्व और व्यावसायिक दक्षता का विकास करती है।

इंटर्नशिप का उद्देश्य

एम.ए. हिंदी के इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों को भाषा और साहित्य के सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना है। इंटर्नशिप के माध्यम से विद्यार्थी—

* शैक्षणिक ज्ञान और व्यावसायिक आवश्यकताओं के बीच की दूरी को कम करते हैं।
* कार्यालयी एवं संस्थागत कार्यप्रणाली को निकट से समझते हैं।
* मौखिक तथा लिखित संचार कौशल का विकास करते हैं।
* अनुसंधान, संपादन, लेखन और प्रस्तुतीकरण की व्यावहारिक दक्षता प्राप्त करते हैं।
* भविष्य के रोजगार एवं करियर की संभावनाओं का आकलन करते हैं।
* विभिन्न संस्थानों के विशेषज्ञों से संपर्क स्थापित कर व्यावसायिक नेटवर्क विकसित करते हैं।

इंटर्नशिप के प्रमुख क्षेत्र

हिंदी विषय के विद्यार्थियों के लिए इंटर्नशिप के अनेक क्षेत्र उपलब्ध हैं। जैसे—

* विद्यालय एवं महाविद्यालय
* समाचार-पत्र एवं पत्रिका कार्यालय
* प्रकाशन संस्थान
* आकाशवाणी एवं दूरदर्शन
* डिजिटल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म
* राजभाषा विभाग
* सरकारी एवं निजी कार्यालय
* शोध संस्थान
* गैर-सरकारी संगठन (NGO)
* सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्थाएँ

इन संस्थानों में कार्य करते हुए विद्यार्थी कार्यालयी व्यवहार, अभिलेखन, संपादन, रिपोर्ट लेखन, अनुवाद, प्रूफरीडिंग, सामग्री निर्माण तथा शोध-संबंधी प्रक्रियाओं का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करते हैं।

अनुसंधान एवं रोजगार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

पाठ्यक्रम में इंटर्नशिप के दो प्रमुख स्वरूप निर्धारित किए गए हैं—

(1) रोजगार क्षमता विकसित करने हेतु इंटर्नशिप

इस प्रकार की इंटर्नशिप विद्यार्थियों को कार्यस्थल की वास्तविक आवश्यकताओं से परिचित कराती है। समय-प्रबंधन, टीमवर्क, नेतृत्व क्षमता, संवाद कौशल तथा पेशेवर नैतिकता का विकास इसी प्रक्रिया में होता है।

(2) अनुसंधान योग्यता विकसित करने हेतु इंटर्नशिप

जो विद्यार्थी उच्च शिक्षा एवं शोध में रुचि रखते हैं, उनके लिए यह इंटर्नशिप अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है। वे डेटा संकलन, सर्वेक्षण, साक्षात्कार, संदर्भ-संग्रह, विश्लेषण तथा शोध-लेखन जैसी प्रक्रियाओं का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

पाठ्यक्रम परिणामों की प्राप्ति

यह इंटर्नशिप विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमताओं का विकास करती है—
* व्यावसायिक अनुभवों का स्मरण एवं उपयोग।
* कार्यालयी वातावरण की समझ।
* अर्जित ज्ञान का वास्तविक जीवन में प्रयोग।
* संस्थागत एवं कॉर्पोरेट कार्यप्रणाली का विश्लेषण।
* व्यावसायिक प्रक्रियाओं का मूल्यांकन एवं सुधार की दृष्टि विकसित करना।

इस प्रकार पाठ्यक्रम के सभी अधिगम परिणाम (Learning Outcomes) व्यवहारिक रूप में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाते हैं।

हिंदी और नई संभावनाएँ

डिजिटल युग में हिंदी का स्वरूप निरंतर विस्तृत हो रहा है। आज कंटेंट राइटिंग, ब्लॉग लेखन, सोशल मीडिया प्रबंधन, ई-लर्निंग, मशीन अनुवाद, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), भाषा प्रौद्योगिकी, तकनीकी लेखन तथा डिजिटल संपादन जैसे अनेक नए क्षेत्र हिंदी विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध हैं। इंटर्नशिप इन उभरते क्षेत्रों का व्यावहारिक परिचय कराती है और विद्यार्थियों को बदलते समय की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करती है।

निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसे सक्षम, आत्मविश्वासी और कुशल युवा तैयार करना है जो ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्यों से संपन्न हों। एम.ए. हिंदी पाठ्यक्रम की इंटर्नशिप इसी उद्देश्य की सार्थक अभिव्यक्ति है। यह विद्यार्थियों को केवल रोजगारोन्मुख नहीं बनाती, बल्कि उन्हें एक संवेदनशील शोधकर्ता, सक्षम संप्रेषक, कुशल संपादक और उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकसित करती है।

निस्संदेह, इंटर्नशिप हिंदी शिक्षा को जीवन, समाज और रोजगार से जोड़ने वाला एक प्रभावी सेतु है, जो विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला सिद्ध होगी।

डॉ राजपाल
हिन्दी विभाग
गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय

ENGISH PHRASES WORDS

1. Keep it up!   Keep it up! You’re doing great.
2. Take your time.   Take your time. There’s no hurry.
3. Watch out! Watch out! A car is coming.
4. Be careful.   Be careful while crossing the road.
5. I agree.   I agree with your opinion.
6. I doubt it.   Will he come today? I doubt it.
7. That’s true.   That’s true. I think the same.
8. Of course!   Can you help me? Of course!
9. No chance!   Will he quit? No chance!
10. You never know.   He might win. You never know.
11. Fair enough.   Fair enough. Let’s do it your way.
12. What a relief!   The exam is over. What a relief!
13. It’s up to you.   You can choose. It’s up to you.
14. No big deal.   Don’t worry. It’s no big deal.
15. I can’t wait.   I can’t wait to meet you.
16. Well done!   Well done! You did an excellent job.
17. That’s amazing!   That’s amazing! Congratulations.
18. I’m on it.   Can you fix this? I’m on it.
19. You got this!   Don’t be nervous. You got this!
20. See you around.   I have to leave now. See you around.

फ़िल्म समीक्षा : डाकबंगला

डाकबंगला' पर आधारित फ़िल्म : एक आलोचनात्मक समीक्षा

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के प्रख्यात कथाकार, उपन्यासकार और पटकथा-लेखक कमलेश्वर ने अपने साहित्य में आधुनिक समाज, बदलते मानवीय संबंधों, स्त्री-अस्मिता और जीवन की विडम्बनाओं को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है। उनका उपन्यास 'डाकबंगला' इन्हीं विशेषताओं का प्रतिनिधि उपन्यास है। इस उपन्यास पर आधारित फ़िल्म 'डाक बंगला' (1974) साहित्य और सिनेमा के अंतर्संबंध का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है। यद्यपि फ़िल्म व्यावसायिक दृष्टि से अत्यधिक सफल नहीं रही, किन्तु साहित्यिक संवेदनाओं को चलचित्र के माध्यम से अभिव्यक्त करने का यह एक उल्लेखनीय प्रयास है।

उपन्यास और फ़िल्म का संबंध

'डाकबंगला' का केंद्रीय कथ्य नायिका इरा के जीवन-संघर्ष पर आधारित है। उसका जीवन अनेक संबंधों, टूटे विश्वासों और भावनात्मक अस्थिरताओं से होकर गुजरता है। वह जिस-जिस व्यक्ति के संपर्क में आती है, वह उसके जीवन में कुछ समय के लिए ठहरता है और फिर चला जाता है। इसीलिए उसके जीवन की तुलना एक डाकबंगले से की गई है, जहाँ यात्री कुछ समय रुकते हैं, लेकिन कोई स्थायी रूप से नहीं रहता। फ़िल्म इस मूल प्रतीक और संवेदना को बनाए रखने का प्रयास करती है।

कथानक का प्रस्तुतीकरण

फ़िल्म का कथानक मूल उपन्यास के अनुरूप आगे बढ़ता है। इसमें नायिका के अतीत, वर्तमान और मानसिक द्वंद्व को फ्लैशबैक तथा संवादों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। कहानी किसी रोमांचक घटनाक्रम पर नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं और मनोवैज्ञानिक स्थितियों पर आधारित है। यही कारण है कि फ़िल्म का प्रभाव दर्शक के मन पर धीरे-धीरे स्थापित होता है।

निर्देशन

निर्देशक ने उपन्यास की आत्मा को सुरक्षित रखने का प्रयास किया है। फ़िल्म में अनावश्यक नाटकीयता से बचते हुए पात्रों की मन:स्थितियों को प्राथमिकता दी गई है। कैमरा, प्रकाश, वर्षा, सुनसान वातावरण तथा डाकबंगले के दृश्य नायिका के अकेलेपन और मानसिक रिक्तता को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करते हैं। फ़िल्म का वातावरण गंभीर और चिंतनशील है, जो साहित्यिक कृति के अनुरूप प्रतीत होता है।

अभिनय

मुख्य अभिनेत्री ने इरा के चरित्र को संवेदनशीलता और सहजता के साथ प्रस्तुत किया है। उसके चेहरे के भाव, मौन और संवादों में जीवन की पीड़ा स्पष्ट दिखाई देती है। अन्य कलाकारों ने भी अपने-अपने पात्रों के माध्यम से पुरुष-प्रधान समाज की मानसिकता और अवसरवादिता को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

तकनीकी पक्ष

फ़िल्म का छायांकन उसकी प्रमुख विशेषताओं में से एक है। प्राकृतिक दृश्यों, सुनसान डाकबंगले, वर्षा और प्रकाश-अंधकार के प्रयोग ने कहानी की मनोवैज्ञानिक गहराई को उभारने में सहायता की है। संगीत अपेक्षाकृत संयमित है और कथा पर हावी नहीं होता। संपादन भी कथा की गंभीरता के अनुरूप है, यद्यपि कुछ स्थानों पर गति धीमी प्रतीत होती है।

स्त्री-विमर्श की दृष्टि से

'डाकबंगला' की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि यह स्त्री को केवल भावनात्मक पात्र के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करती है। इरा का चरित्र समाज में स्त्री की असुरक्षा, भावनात्मक शोषण और पहचान के संकट का प्रतिनिधित्व करता है। फ़िल्म इन प्रश्नों को संवेदनशीलता के साथ सामने लाती है और दर्शकों को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती है।

फ़िल्म की प्रमुख विशेषताएँ

* मूल उपन्यास की संवेदनाओं को पर्याप्त सीमा तक सुरक्षित रखा गया है।
* स्त्री-मन की जटिल मनोवैज्ञानिक स्थितियों का प्रभावशाली चित्रण।
* प्रतीकात्मक शैली और साहित्यिक संवाद।
* गंभीर और कलात्मक प्रस्तुति।
* सामाजिक यथार्थ और मानवीय संबंधों का मार्मिक चित्रण।

सीमाएँ

* फ़िल्म की गति अपेक्षाकृत धीमी है।
* व्यावसायिक मनोरंजन के अभ्यस्त दर्शकों को यह कम आकर्षित करती है।
* उपन्यास के आत्मसंवाद और मनोवैज्ञानिक गहराई को पूर्ण रूप से दृश्य माध्यम में रूपांतरित नहीं किया जा सका।
* कुछ पात्रों का विकास अपेक्षाकृत सीमित रह गया है।

निष्कर्ष

कमलेश्वर के उपन्यास 'डाकबंगला' पर आधारित फ़िल्म हिन्दी साहित्य और समानांतर सिनेमा के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। यह फ़िल्म मनोरंजन से अधिक संवेदना, विचार और सामाजिक यथार्थ को महत्व देती है। नायिका इरा के माध्यम से स्त्री-अस्तित्व, अकेलेपन, प्रेम, विश्वास और सामाजिक विडम्बनाओं को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि फ़िल्म व्यावसायिक सफलता प्राप्त नहीं कर सकी, फिर भी साहित्यिक दृष्टि से इसका महत्त्व निर्विवाद है। हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों, शोधार्थियों तथा समानांतर सिनेमा के अध्येताओं के लिए यह फ़िल्म अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत उपयोगी है।

संदर्भ

1. कमलेश्वर — डाकबंगला (उपन्यास)।
2. हिन्दी साहित्य और सिनेमा पर विभिन्न आलोचनात्मक अध्ययन।
3. भारतीय समानांतर सिनेमा से संबंधित शोध एवं समीक्षा-ग्रंथ।

इंटर्नशिप (Viva) मौखिक परीक्षा डॉ राजपाल -

इंटर्न प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए एम ए (हिंदी)के विद्यार्थी -

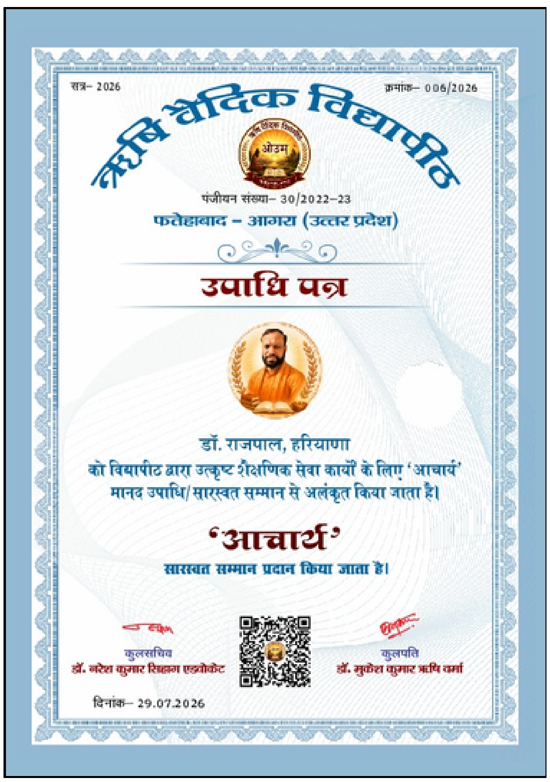

सत्र– 2026

क्रमांक– 006/2026

ऋषि वैदिक विद्यापीठ

पंजीयन संख्या– 30/2022–23

फतेहाबाद – आगरा (उत्तर प्रदेश)

उपाधि पत्र

डॉ. राजपाल, हरियाणा

को विद्यापीठ द्वारा उत्कृष्ट शैक्षणिक सेवा कार्यों के लिए 'आचार्य' मानद उपाधि/ सारस्वत सम्मान से अलंकृत किया जाता है।

'आचार्य'

सारस्वत सम्मान प्रदान किया जाता है।

कुलसचिव
डॉ. नरेश कुमार सिहाग एडवोकेट

कुलपति
डॉ. मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

दिनांक– 29.07.2026

राजेश भारती अपनी पुस्तक नीरज मनचंदा व श्रीमती मनचंदा के साथ पुस्तक भेंट करते हुए -

1. महाभाष्य' की 'महाभाष्यदीपिका' (त्रिपदी महाभाष्य) नामक टीका किसने लिखी? - भर्तृहरि
2. वेदों की सुरक्षा तथा उनके तात्त्विक अध्ययन के लिए ६ अंग विकसित हुए। (१) शिक्षा (२) कल्प (३) व्याकरण (४) निरुक्त (५) छंद (६) ज्योतिष। इनमें से शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त और छंद का सम्बंध भाषा शास्त्र से है। शिक्षा का सम्बंध ध्वनिविज्ञान से है। व्याकरण में पद विज्ञान और वाक्य विज्ञान का समन्वय है। निरुक्त में शब्दों की पाद-व्यवस्था और प्रत्येक पाद में वर्णों और मात्राओं की निर्धारित संख्या का वर्णन होता है।
3. प्रातिशाख्य क्या है? 'शिक्षा' का विशद रुप
4. सम्प्रति कितने प्रतिशाख्य उपलब्ध है? -६
5. ऋक्प्रतिशाख्य और अथर्वप्रतिशाख्य के रचयिता हैं? - शौनक
6. शुक्ल यजु : प्रतिशाख्य के रचयिता हैं? - कात्यायन
7. तैत्तरीय और मैत्रयणी प्रतिशाख्य किस वेद से सम्बंधित हैं? - कृष्ण-युजर्वेद
8. सामदेव का प्रातिशाख्य है? - पुष्पसूत्र
9. पतंजलि के महाभाष्य पर 'महाभाष्य प्रदीप' नामक टीका किसने लिखी? - कैयट
10. शब्द-ब्रह्म, स्फोट ब्रह्म या वाक्य ब्रह्म की स्थापना किसने की? - भर्तृहरि
11. यास्क मुनि का समय है? -८०० ई० पू० के लगभग
12. भर्तृहरि का समय है? - लगभग ३४० ई०
13. यास्क के पूर्व कितने निरुक्तकारों का उल्लेख मिलता है? - १७
14. घोष और अघोष ध्वनियों की दृष्टि से हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि भाषाओं के सभी स्वर हैं? - घोष
15. हिन्दी व्यंजनों में पाश्विक ध्वनि है? -ल

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
कुंडल	कर्ण-आभूषण
काश	घास विशेष
कास	खाँसी
कृत	किया हुआ
क्रीत	खरीदा हुआ
कंत	पति
कांत	सुन्दर
क्रांत	कुचला हुआ
क्लांत	थका हुआ

विलोम शब्द (Antonyms)

भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन द्वंद्वात्मक, अन्तर्विरोधात्मक है, इसलिए प्रत्येक भाषा में दो विपरीत अर्थों, मंतव्यों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का अस्तित्व रहता है। विपरीत भाव को व्यक्त करने के लिए ही विलोम (उल्टा) शब्दों की जानकारी आवश्यक है। हिंदी में ऐसे विलोम शब्द या तो मूल शब्द के रूप में पहले से ही विद्यमान हैं; जैसे दिन-रात, सुख-दुःख, छोटा-बड़ा आदि या फिर उपसर्ग लगाकर; जैसे-ज्ञानी-अज्ञानी, अर्थ-अनर्थ या उपसर्ग बदलकर; जैसे-सक्षम-अक्षम, अनुकूल-प्रतिकूल बनाए जाते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्दों की सूची इस प्रकार है-

शब्द	अर्थ
आनंद	विषाद, शोक
आनंदमय	विषादपूर्ण
आर्द्र	शुष्क
आयात	निर्यात
आकांक्षा	अनाकांक्षा
आग्रह	दुराग्रह
आधुनिक	प्राचीन
आविर्भाव	तिरोभाव (लोप)
आविर्भूत	तिरोभूत/तिरोहित
आरूढ़	अनारूढ
आमिष	निरामिष
आज्ञाकारी	अनाज्ञाकारी
आज्ञापालन	अवज्ञा
आत्मनिर्भर	अनुजीवी, परजीवी

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Retained = रोक लेना/प्रतिबंधित

Retrenchment = छंटनी

Revalidate पुनः वैध करना

Reversion = परावर्तन

Revert = पूर्व पद पर पुनः लौटना

Review = समीक्षा/पुनरीक्षण

Revoke = निरस्त करना

Rice paper = टाइप-काग़ज़

Rigorous imprisonment = सश्रम कारावास

Stipend = वृत्तिका

Stipulate = अनुबंध करना

Stores = सामान

Stricture = अवक्षेप

Strike off = काट देना

Sublet = उपपट्टे पर देना/आगे भाड़े पर देना

Sublettage = दर किरायेदारी

Submission = निवेदन/प्रस्तुत करना

Subordinate अधीनस्थ

Subsidiary = गौण/सहायक

Subsidise = सहायता देना

Subsistence = निर्वाह भत्तो

Substitute प्रतिस्थानी

Succession = उत्तराधिकार

Suffix = अंत में जोड़ना

Superannuate = निवृत्त होना

Superannuation age = अधिवार्षिकी आयु

Superscription = उपरिलेख

Surcharge = अधिभार

Surplus = अधिशेष

Surveillance = निगरानी

System = पद्धति/प्रणाली

ग़ज़ल

यादें बड़ी हसीन हैं पर, होती हैं बेवफ़ा,
आती हैं याद भी तभी, कोई होता है जब जुदा।

हँसते हुए जो साथ थे, पल में बिखर गए,
रिश्तों की धूप ढल गई, रह गई बस दुआ।

आँखों में आज भी वही, सपनों का कारवाँ,
दिल ढूँढ़ता है रात-दिन, बीता हुआ समाँ।

चाहा जिसे दिलोजान से, वो दूर हो गया,
तक़दीर ने लिखी थी शायद, मिलकर भी फ़ासला।

महफ़िल में मुस्कुरा लिए, तन्हा मगर रहे,
चेहरे पे थी हँसी मगर, दिल रोया बेइन्तहा।

कुछ ज़ख़्म वक्त भर गया, कुछ आज भी हरे,
यादों का सिलसिला मगर, रुकता नहीं ज़रा।

यादें बड़ी हसीन हैं पर, होती हैं बेवफ़ा,
आती हैं याद भी तभी, कोई होता है जब जुदा।

डॉ राजेंद्र प्रसाद राज़ (डॉ.आर पी राज़)

पुस्तक समीक्षा

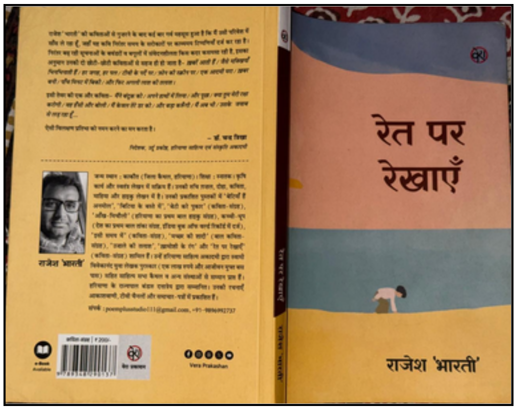

लेखक: राजेश 'भारती'
पुस्तक: "रेत पर रेखाएँ"
मूल्य: ₹200.00
पृष्ठ: 142
संस्करण : 2025
वेरा प्रकाशन मेन डिग्गी रोड, मदरामपुरा, सांगानेर जयपुर-302029 (राजस्थान)

आज का युग सूचनाओं का महासागर बन चुका है, जहाँ चारों तरफ खबरों और आंकड़ों का बवंडर है। ऐसे में मनुष्य की मूल संवेदनाएँ सूचनाओं की भीड़ में किस प्रकार घुट रही हैं, इसे गहराई से महसूस करना और उसे कविता की भाषा देना एक संवेदनशील रचनाकार का ही काम है। राजेश 'भारती' की कविताएँ इसी जीवंत परिवेश से उपजी हैं, जो समकालीन समय के सच पर करारी और मार्मिक टिप्पणियाँ करती हैं। उनकी कविताओं से गुजरते हुए यह अहसास बार-बार होता है कि हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं जहाँ मनुष्यता और संवेदना दोनों दांव पर लगे हैं।
राजेश 'भारती' की पहली उद्धृत कविता आज के मीडिया और डिजिटल युग की विसंगतियों पर सीधा प्रहार करती है। जिस प्रकार मक्खियाँ भिनभिनाती हैं, ठीक उसी प्रकार आज चारों तरफ खबरें और सूचनाएँ अकारण शोर मचा रही हैं। टीवी के पर्दे से लेकर फोन की स्क्रीन तक, हर तरफ मौत और त्रासदी को एक उत्पाद की तरह परोसा जा रहा है।

"एक आदमी मरा / खबर बनी / पाँच मिनट में बिकी और फिर अगली लाश की तलाश"—यह पंक्तियाँ आज के बाजारवादी समाज और संवेदनशून्य होती पत्रकारिता का सबसे नग्न और भयानक सच उजागर करती हैं।

उनकी दूसरी छोटी किंतु अत्यंत प्रभावशाली कविता आतंक, असुरक्षा और हिंसा के मनोविज्ञान को बहुत गहरे तक छूती है। जब कवि बंदूक से पूछता है कि क्या वह उसकी रक्षा करेगी, तो बंदूक का यह कहना कि—"मैं केवल तेरे डर को और बड़ा करूँगी"—अस्त्र-शस्त्र और हिंसा की निरर्थकता को पूरी शिद्दत से बयान करता है। यह कविता दिखाती है कि बाहरी सुरक्षा के साधन अंततः मनुष्य के आंतरिक भय को और अधिक बढ़ाते हैं, और कवि का उस जवाब से लगातार संघर्षरत रहना एक जागरूक रचनाकार की बेचैनी को दर्शाता है।

राजेश 'भारती' की कविताएँ आकार में भले ही छोटी हों, लेकिन अपने प्रभाव और अंतर्वस्तु में बहुत विस्तृत और गंभीर हैं। वे समकालीन जीवन के विज्ञापनी शोर, यांत्रिक जीवनशैली और मानवीय विडम्बनाओं को सहजता से उकेरती हैं। यह कविताएँ पाठक को केवल झकझोरती नहीं हैं, बल्कि उसे सोचने पर मजबूर करती हैं कि हम किस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

यह पुस्तक वर्तमान समय के यथार्थ को समझने और उससे जूझने के लिए एक अनिवार्य दस्तावेज की तरह है। गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय की ओर से मैं इस सशक्त एवं वैचारिक कविता-संग्रह की सराहना करता हूँ और पाठकों के बीच इसके व्यापक स्वागत की कामना करता हूँ।

समीक्षक
डॉ राजपाल
हिंदी-विभाग